The Asian Thinker
A Quarterly Bilingual Peer-Reviewed Journal for Social Sciences and Humanities
Year-7 Volume: IV (Special), October-December, 2025
Issue-28 ISSN: 2582-1296 (Online)
Website: www.theasianthinker.com **Email**: asianthinkerjournal@gmail.com

54. भारतीय ज्ञान परंपरा में गुरुकुल शिक्षा प्रणाली: एक संक्षिप्त अध्ययन

डॉ. नवीन कुमार
दर्शनशास्त्र विभाग, महेश प्रसाद सिंह साइंस कॉलेज, मुजफ्फरपुर
बाबासाहेब भीमराव अम्बेडकर बिहार विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपुर

शोध सार

प्रस्तुत शोध-पत्र में प्राचीन भारतीय ज्ञान परंपरा की आधारशिला रही गुरुकुल शिक्षा प्रणाली का अध्ययन किया गया है। इस अध्ययन का उद्देश्य भारतीय शिक्षा की उस पारंपरिक व्यवस्था को पुनः समझना है, जिसमें शिक्षा केवल ज्ञान प्राप्ति का साधन न होकर, जीवन-निर्माण की एक समग्र प्रक्रिया थी। गुरुकुल शिक्षा प्रणाली वैदिक काल से लेकर 18वीं शताब्दी तक भारत की सामाजिक, नैतिक और आध्यात्मिक उन्नति का प्रमुख आधार रही। इसमें गुरु और शिष्य के बीच गहन संबंध, आत्मानुशासन, व्यावहारिकता, नैतिकता तथा कौशल-विकास पर विशेष बल दिया जाता था।

लेख में गुरुकुल की उत्पत्ति, ऐतिहासिक विकास, उद्देश्य, प्रमुख विशेषताएँ और पतन के कारणों का विश्लेषण किया गया है। अध्ययन से स्पष्ट होता है कि मुस्लिम शासन और ब्रिटिश उपनिवेशवाद के दौरान गुरुकुल प्रणाली को भारी क्षति पहुँची, जिसके परिणामस्वरूप भारतीय शिक्षा अपनी मूल आत्मा से दूर होती चली गई। आधुनिक शिक्षा व्यवस्था ने तकनीकी विकास तो किया, परन्तु नैतिक और आध्यात्मिक मूल्यों को पीछे छोड़ दिया।

शोध में यह प्रतिपादित किया गया है कि वर्तमान युग में गुरुकुल प्रणाली की अनेक शिक्षाएँ प्रासंगिक हैं। अनुभवात्मक, नैतिक और व्यावहारिक शिक्षा के सिद्धांत आज भी शिक्षा के मानवीय रूप को समृद्ध कर सकते हैं। इसीलिए आवश्यकता है कि आधुनिक और पारंपरिक प्रणालियों का संतुलित समन्वय कर एक ऐसी संकर प्रणाली विकसित की जाए, जिसमें आधुनिक विज्ञान की उपयोगिता और गुरुकुल की मूल्यनिष्ठा — दोनों का समावेश हो।

अंततः अध्ययन यह निष्कर्ष देता है कि यदि भारत को पुनः "विश्वगुरु" बनना है तो गुरुकुल शिक्षा की आत्मा को आधुनिक संदर्भों में पुनर्जीवित करना होगा। यह प्रणाली केवल ज्ञानार्जन नहीं, बल्कि चरित्र निर्माण, आत्मसंयम और जीवन कौशल की समग्र साधना का माध्यम है।

शब्द संकेतः- गुरुकुल शिक्षा प्रणाली प्राचीन उन्नति आधुनिक लचीलापन सकारात्मक विश्वविद्यालय कौशल अकादमिक मूल्यवान।

परिचय

प्रस्तुत शोध-पत्र में भारत की गौरवशाली शिक्षा प्रणाली 'गुरुकुल शिक्षा प्रणाली' पर एक संक्षिप्त अध्ययन प्रस्तुत करते हुए वर्तमान समय में इसकी प्रासंगिकता को स्पष्ट करने का प्रयास किया गया है। 'गुरुकुल शिक्षा प्रणाली' प्राचीन भारतीय समाज की भौतिक और आध्यात्मिक उन्नति की आधारशिला थी। गुरुकुल एक प्रकार की

The Asian Thinker
A Quarterly Bilingual Peer-Reviewed Journal for Social Sciences and Humanities
Year-7 Volume: IV (Special), October-December, 2025
Issue-28 ISSN: 2582-1296 (Online)
Website: www.theasianthinker.com **Email**: asianthinkerjournal@gmail.com

आवासीय विद्यालयी शिक्षा है जिसमें छात्र गुरु के साथ रहते हैं और गुरु से शिक्षा प्राप्त करते हैं। यहाँ छात्र भी गुरु के दैनिक कार्यों में उनकी मदद करता है और उनके आचरण से भी सीखने का प्रयत्न करता है। अंग्रेजी हुकूमत से पहले, यानी वैदिक और महाभारत काल से लेकर 18वीं शताब्दी तक, सभी को इसी तरह से शिक्षा दी जाती थी। यह भारतीय उपमहाद्वीप की स्वदेशी शिक्षा प्रणाली है। गुरुकुल की शुरुआत वैदिक युग में हुई थी जब मौखिक परंपराओं के माध्यम से शिक्षा दी जाती थी और गुरु-शिष्य परंपरा की मदद से इस प्रणाली को जीवित रखा गया था। धीरे-धीरे इन गुरुकुलों ने संस्थागत रूप ले लिया और हर तरह का ज्ञान प्रदान करने के लिए इस प्रणाली ने काम करना शुरू कर दिया। वस्तुतः भारत में शिक्षा की गुरुकुल प्रणाली वैदिक काल में फली-फूली। प्राचीन काल में 'गुरुकुल' शिक्षा के मुख्य केंद्र के रूप में कार्य करते थे। गुरुकुलों में दूर-दूर से छात्र अपनी शिक्षा पूरी करने आते थे। वे गुरुकुल छोटे-बड़े सभी प्रकार के होते थे। यहाँ यह उल्लेख करना आवश्यक प्रतीत होता है कि भगवान श्रीराम और श्रीकृष्ण जैसे पावन लोगों की शिक्षा भी वशिष्ठ मुनि के गुरुकुल में ही हुई थी।

गुरुकुल का अर्थ

गुरुकुल शब्द दो शब्दों 'गुरु' और 'कुल' से मिलकर बना है। इसका शाब्दिक अर्थ है 'गुरु की वंशावली (कुल)'। लेकिन इसका इस्तेमाल सदियों से भारत में शैक्षणिक संस्थानों के अर्थ में किया जाता रहा है। जो ऋषि हजारों ऋषियों या विद्यार्थियों का पालन-पोषण करते थे तथा उन्हें शिक्षा देते थे, उन्हें कुलपति कहा जाता था। सभी विद्यार्थी कुलपति के महा-शैक्षणिक परिवार का सदस्य होता था। उनके मानसिक और बौद्धिक विकास की जिम्मेदारी कुलपति पर होती थी। कुलपति विद्यार्थियों के शिक्षा के साथ-साथ उनके शारीरिक स्वास्थ्य और खुशहाली के बारे में भी चिंतित रहते थे। संभवतः यही कुलपति शब्द का प्रयोग आज विश्वविद्यालय के 'कुलपति' के लिए किया जाता है, जिनकी जिम्मेदारी छात्र-हित हेतु पूरे विश्वविद्यालय के समुचित संचालन की होती है।

गुरुकुल का ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य

गुरुकुल का इतिहास काफी पुराना है, जिसे पूर्णरूपेण इस संक्षिप्त आलेख में समाहित नहीं किया जा सकता है। इसलिए यहाँ हमने रामायण और महाभारत काल के कुछ प्रमुख बातों को संक्षेप में रखने की कोशिश की है। महर्षि विश्वामित्र ने अपने गुरुकुल में भगवान राम और लक्ष्मण को युद्ध में इस्तेमाल किए जाने वाले दिव्य हथियारों (देवास्त्रों) का उपयोग सिखाया और गायत्री मंत्र की रचना की। उन्होंने ताड़का, मारीच और सुबाहु जैसे शक्तिशाली राक्षसों को हराने में उनका मार्गदर्शन किया। इसी तरह महर्षि वाल्मीकि के गुरुकुल में माता सीता ने शरण ली और लव-कुश को जन्म दिया। लव-कुश को शास्त्र और शस्त्र विद्या इन्हीं ने सिखाई और रामायण की रचना की। कौरवों और पांडवों के गुरु 'गुरु द्रोणाचार्य' थे जिन्होंने उन्हें शिक्षा प्रदान की थी। उनका गुरुकुल वर्तमान "गुरुग्राम" के पास कहीं स्थित था, जिसका नाम भी इसी से पड़ा है। पुनः नैमिषारण्य महत्वपूर्ण आश्रमों में से एक था। यह एक विश्वविद्यालय की तरह था जिसके कुलपति सौंक ऋषि थे; यानी यहां एक समय में कम से कम 10,000 विद्यार्थी अपने गुरु के सानिध्य में रहते थे। यह उत्तर प्रदेश राज्य में नीमसार में चक्र तीर्थ के नाम से प्रसिद्ध है। महाभारत में कण्व ऋषि के आश्रम का विस्तृत वर्णन किया गया है जो सरयू नदी की सहायक नदी मालिनी के तट पर स्थित था।

The Asian Thinker
A Quarterly Bilingual Peer-Reviewed Journal for Social Sciences and Humanities
Year-7 Volume: IV (Special), October-December, 2025
Issue-28 ISSN: 2582-1296 (Online)
Website: www.theasianthinker.com **Email**: asianthinkerjournal@gmail.com

इसी तरह महर्षि व्यास का आश्रम भी शिक्षा के सबसे प्रसिद्ध केंद्रों में से एक था। महर्षि व्यास ने भी वेदों का संकलन इसी आश्रम में किया था।

एक अनुमान के अनुसार, प्राचीन भारत में एक समय में 50 से अधिक विश्वविद्यालय थे। इनमें से कुछ प्रसिद्ध हैं- तक्षशिला विश्वविद्यालय, नालंदा विश्वविद्यालय, विक्रमशिला विश्वविद्यालय, वलभी विश्वविद्यालय, मिथिला विश्वविद्यालय, तेलहारा विश्वविद्यालय, शारदा पीठ मंदिर विश्वविद्यालय, पुष्पगिरि विश्वविद्यालय, सोमपुरा विश्वविद्यालय, विक्रमपुर विश्वविद्यालय आदि। प्रसिद्ध व्याकरणविद् महर्षि पाणिनी तक्षशिला विश्वविद्यालय के ही एक प्रसिद्ध छात्र थे जिन्होंने प्रसिद्ध पुस्तक अष्टाध्यायी लिखी। इसी तरह आचार्य चाणक्य भी थे जिन्होंने अर्थशास्त्र लिखा।

गुरुकुल शिक्षा प्रणाली का पतन

महाभारत युद्ध गुरुकुल शिक्षा प्रणाली के पतन का एक मुख्य कारण बना क्योंकि युद्ध के बाद पैदा हुए बौद्धिक शून्य के परिणामस्वरूप सामाजिक संरचना में गिरावट आई जिसने वेदों को नकारने वाले दर्शन को जन्म दिया जैसे बुद्ध दर्शन, जैन दर्शन आदि। फिर विदेशी शासकों से भी गुरुकुल प्रणाली को चुनौतियों का सामना करना पड़ा। विदेशी आक्रमणकारी अपने साथ अपनी शिक्षा प्रणाली लेकर आए और उन्हें स्वदेशी लोगों पर थोप दिया। फिर मुस्लिम शासकों के द्वारा गुरुकुल परंपरा के लिए प्रसिद्ध नालंदा, विक्रमशिला और उदयंतपुरी के विश्वविद्यालयों को तहस-नहस कर दिया गया। "बौद्ध भिक्षुओं का अंत" नामक एक पेंटिंग 1193 में बख्तियार खिलजी द्वारा प्रदर्शित की गई जो स्पष्ट रूप से नालन्दा के विनाश को दर्शाती है। नालन्दा, विक्रमशिला और उदयंतपुरी के विश्वविद्यालयों के नष्ट किए जाने की घटना को मिन्हाज-ए-सिराज जुजानी ने तबकात-ए-नासिरी में स्पष्ट रूप से दर्ज किया है।

आगे चलकर ब्रिटिश राजनीतिज्ञ थॉमस बैबिंगटन मैकाले ने भारतीय शिक्षा व्यवस्था में आमूल-चूल परिवर्तन किए। कंपनी ने गुरुकुलों को सभी तरह के फंड देना बंद कर दिया। मुस्लिम शासकों के लगातार हमलों के साथ सामाजिक उदासीनता ने उनके पतन को और बढ़ा दिया। लेकिन यही अंग्रेजी हुकूमत थी जिसने पहले से ही मर रही गुरुकुल प्रणाली को मौत के घाट उतार दिया। जल्द ही बच्चे को कॉन्वेंट स्कूल में भेजना फैशन बन गया और गुरुकुल प्रणाली इतिहास बन कर रह गई। ब्रिटिश नीतियों के फलस्वरूप, 19वीं सदी में पूरे भारत में गुरुकुलों की संख्या में भारी गिरावट आ गई। 1800 के दशक में दुनिया की सबसे बड़ी अर्थव्यवस्थाओं में से एक भारत 1914 में दुनिया की सबसे गरीब अर्थव्यवस्थाओं में से एक बन गया, जिसमें अधिकांश भारतीयों के लिए शिक्षा प्राप्त करना असंभव हो गया, इसलिए बचे हुए गुरुकुल भी बंद कर दिए गए।

स्वतंत्र भारत की सरकारों ने भी कमोबेश अपने पूर्ववर्ती सरकारों की तरह गुरुकुल शिक्षा प्रणाली की ओर कोई विशेष ध्यान नहीं दिया। आज 21वीं सदी में गुरुकुल शिक्षा प्रणाली की स्थिति 20वीं सदी जैसी ही दयनीय है। पिछले एक दशक में भारत में गुरुकुलों की संख्या में थोड़ी वृद्धि हुई है, लेकिन उनमें से ज्यादातर गुरुकुल नहीं

The Asian Thinker
A Quarterly Bilingual Peer-Reviewed Journal for Social Sciences and Humanities
Year-7 Volume: IV (Special), October-December, 2025
Issue-28 ISSN: 2582-1296 (Online)
Website: www.theasianthinker.com **Email**: asianthinkerjournal@gmail.com

बल्कि विद्यालय हैं। 'गुरुकुल' अपनी विशेषताएँ खोते चले गए और नाम मात्र के गुरुकुल बनकर रह गए। 'गुरुकुल' के पतन का एक प्रमुख कारण सीबीएसई पैटर्न का प्रसार भी माना जा सकता है जिसमें भारतीय ज्ञान का अभाव था।

गुरुकुल में अध्ययन करने के लाभ

'गुरुकुल' के शिक्षक हिंदू धर्म तथा वेदों के बारे में ज्ञान प्रदान करते हैं और उन्हें जीवन का व्यावहारिक दृष्टिकोण देते हैं। उनका मुख्य उद्देश्य उन्हें अच्छा इंसान बनाना और उन्हें मानवीय मूल्यों की शिक्षा देना है। इसलिए गुरुकुल में गुरुकुल के शिक्षकों के लिए मानवीय मूल्य बहुत महत्वपूर्ण हैं। उनकी शिक्षा प्रणाली आज की शिक्षा प्रणाली से अलग थी; गुरुकुल में वे छात्र के चरित्र को सुधारने में मदद करते हैं। गुरुकुल प्रणाली में संचार का माध्यम 'संस्कृत' था। सभी पाठ संस्कृत भाषा में दिए गए थे। वे उन्हें संस्कृत, परंपरा और गुणों के बारे में जागरूक करते थे और हिंदुओं की परंपरा को बढ़ावा देते थे। ये छात्र अपने कौशल को अधिक कुशलता से विकसित करते हैं और अधिक अनुशासित होते हैं। गुरुकुल में ''गुरु'' द्वारा दिए गए निर्देश सबसे महत्वपूर्ण चीजें हैं, और गुरुकुल के छात्रों को शिक्षक या गुरु के निर्देशों का पालन करना होता था। छात्र द्वारा पहनी जाने वाली पोशाक धोती और कुर्ता थी; छात्र के लिए कोई विशेष वेशभूषा नहीं थी। गुरुकुल के आचार्य छात्र को जीवन में हर तरह की परिस्थितियों से निपटने का तरीका सिखाते थे जिससे वे जीवन में सफल हो सकें।

आधुनिक स्कूल में पढ़ाई के फायदे

आधुनिक स्कूल की संरचना वास्तव में 'गुरुकुल' से काफी अलग होते हैं। आधुनिक स्कूल में शिक्षक किसी भी अवधारणा को अधिक आसानी से समझाने के लिए अलग तरह के शिक्षण उपकरण और तकनीक का उपयोग करते हैं। प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में निरंतर हो रहे बदलाव से आज की शिक्षा प्रणाली भी लगभग बदल गई है। आज कंप्यूटर के प्रयोग के साथ, कंप्यूटर के बारे में ज्ञान प्राप्त करना आवश्यक हो गया है। अधिकांश स्कूलों के लिए संचार का माध्यम अंग्रेजी या हिंदी ही है। हिंदी में संवाद करने की बजाय लोग अंग्रेजी में संवाद करना अपनी शान समझते हैं। संस्कृत की परंपरा लगभग समाप्त हो चुकी है। बहुत कम स्कूल ऐसे हैं जो अभी भी छात्रों को संस्कृत पढ़ाते हैं। नित्य हो रहे नए-नए आविष्कारों एवं आधुनिक तकनीक के साथ स्कूल भी अपने आप को अधिक विकसित मान रहे हैं। स्कूल प्रशासन अपने छात्रों को नए-नए खेल और अन्य प्रकार की सुविधाएँ दे रहे हैं। आजकल कई सारे स्कूल प्रबंधक बजट के हिसाब से छात्रों की सुविधा के लिए एयर-कंडीशनर का भी इस्तेमाल करते हैं, जिससे पैसे वाले लोग आकर्षित होते हैं। इस तरह के आधुनिक विद्यालयों में बच्चों को बेल्ट, बैज और आईडी कार्ड के साथ अच्छी तरह से इस्त्री की हुई वर्दी पहनना अनिवार्य होता है। शिक्षक छात्र को गणित, अंग्रेजी, हिंदी, विज्ञान आदि हर विषय के बारे में पढ़ाते और मार्गदर्शन करते हैं, लेकिन समय के साथ सभी बदलाव गलत

The Asian Thinker

The Asian Thinker
A Quarterly Bilingual Peer-Reviewed Journal for Social Sciences and Humanities
Year-7 Volume: IV (Special), October-December, 2025
Issue-28 ISSN: 2582-1296 (Online)
Website: www.theasianthinker.com **Email**: asianthinkerjournal@gmail.com

नहीं हैं। हमें अपने आप को नए परिवेश के अनुकूल बदलना होगा, इसलिए स्कूल को भी बेहतर बनाया जा रहा है। उस जमाने में कुछ ही गुरु होते थे और छात्रों के लिए एक गुरु ही काफी होता था, जबकि आज प्रत्येक विषय के अलग-अलग शिक्षक होते हैं। निःसन्देह जनसंख्या में वृद्धि और विकास के साथ स्कूली शिक्षा के हिस्से का भी विस्तार और परिवर्तन होता है, इसे स्वीकार करना होगा।

वर्तमान संदर्भ में गुरुकुल प्रणाली की प्रासंगिकता

नित्य हो रहे नए-नए आविष्कारों के बावजूद हम कह सकते हैं कि अगर हम भारत को फिर से दुनिया के लिए ज्ञान का भंडार बनाना चाहें तो प्राचीन गुरुकुल शिक्षा प्रणाली को अपनाना होगा। क्योंकि गुरुकुल शिक्षा प्रणाली आधुनिक शिक्षा प्रणाली की तुलना में कहीं अधिक नवीन और लचीली है, तथा सामाजिक न्याय और लचीलापन प्रदान करती है। लेकिन आज की परिस्थितियों के अनुरूप हमें इसमें थोड़ा बदलाव करना चाहिए। समाज के रूप में प्रगति करने के लिए हमें इसकी कमियों को दूर करना होगा और इसके सकारात्मक पहलुओं को बनाए रखना होगा। इसलिए सबसे अच्छा तरीका यह है कि दोनों प्रणालियों को एक साथ मिलाकर एक संकर बनाया जाए जिसमें दोनों दुनिया की सर्वश्रेष्ठ बातें शामिल हों।

वास्तव में शैक्षिक वातावरण का खुलापन केवल गुरुकुल प्रणाली के साथ ही स्थायी बनाया जा सकता है। गुरुकुल एक बच्चे के संपूर्ण विकास के लिए आदर्श विकल्प है क्योंकि यह न केवल शैक्षणिक ज्ञान देता है बल्कि उन्हें जीवन के हर पहलू के लिए तैयार करता है। यह पूर्ण विकसित मनुष्य बनाने की प्रणाली है, जो कि वर्तमान प्रणाली के साथ संभव नहीं है। गुरुकुल की शिक्षा प्रणाली में कई तरीके अपनाए जाते हैं। इनमें से कुछ तरीके बहुत प्रसिद्ध हैं और व्यापक रूप से इस्तेमाल किए जाते हैं जैसे याद करके सीखना। लेकिन गुरुकुल शिक्षा प्रणाली सीखने/सिखाने के पारंपरिक तरीकों से कहीं आगे जाती है। इसमें अनुभवात्मक शिक्षा, प्राकृतिक शिक्षा, व्यावहारिक शिक्षा पद्धति आदि का इस्तेमाल किया जाता है।

गुरुकुल प्रणाली के कुछ प्रमुख गुण

1. गुरुकुल के गुरुओं के पास विशाल जानकारी थी और वे जानते थे कि सबसे कठिन चीजों को कैसे सरल ढंग से निर्देशित किया जाए ताकि छात्र उसे आसानी से ग्रहण कर सके।
2. गुरुकुल परंपरा में चूँकि अधिक समय लगता था, उसकी वजह से अधिकांश विद्यार्थी सर्वगुण सम्पन्न होकर निकलते थे।
3. गुरुकुल परंपरा में छात्र अपने गुरु से एक विशेष शैली का अधिग्रहण करते थे जिससे वे अपने अंदर उच्च स्तर की दक्षता को विकसित कर लेते थे।
4. गुरुकुल के शिष्य गुरु के प्रति उच्च सम्मान का भाव रखते थे और गुरु के प्रति अत्यंत अनुशासित भाव से रहते थे।
5. अधिकांश शिक्षण व्यावहारिक था और शिक्षा की इस शैली से छात्र को कई तरह के फायदे होते थे।

The Asian Thinker
A Quarterly Bilingual Peer-Reviewed Journal for Social Sciences and Humanities
Year-7 Volume: IV (Special), October-December, 2025
Issue-28 ISSN: 2582-1296 (Online)
Website: www.theasianthinker.com **Email**: asianthinkerjournal@gmail.com

6. छात्र को दिया गया वातावरण यह सुनिश्चित करता है कि वह अपनी रुचि के क्षेत्र में एक कारीगर/निपुण व्यक्ति बन जाए।

गुरुकुल प्रणाली के कुछ प्रमुख दोष

1. गुरुकुल परंपरा में एक ही गुरु के संरक्षण में होने के कारण विद्यार्थी को अधिक प्रकार के अनुभव नहीं मिल पाते थे।
2. गुरुकुल परंपरा में पाठ्यक्रम के लिए कोई दिन और आयु निर्धारित नहीं की गई थी, जिससे छात्र को पूरी तरह से शिक्षक पर निर्भर रहने की जरूरत थी।
3. गुरुकुल के पुराने ढांचे ने कला के काल्पनिक पहलू को अपनी शिक्षण-प्रणाली में शामिल नहीं किया।
4. गुरुकुल परंपरा में छात्र को गुरु के लिए रोजमर्रा के घरेलू काम भी करने पड़ते थे, जिसे कुछ छात्र कभी-कभी कठिनाइयों का सामना करते थे।

गुरुकुल में अध्ययन करने के लाभ

'गुरुकुल' के शिक्षक हिंदू धर्म, वेदों के बारे में ज्ञान प्रदान करते हैं और उन्हें जीवन का व्यावहारिक दृष्टिकोण देते हैं। उनका मुख्य उद्देश्य उन्हें अच्छा इंसान बनाना और उन्हें मानवीय मूल्यों की शिक्षा देना है। इसलिए गुरुकुल में गुरुकुल के शिक्षकों के लिए मानवीय मूल्य बहुत महत्वपूर्ण हैं। उनकी शिक्षा प्रणाली आज की शिक्षा प्रणाली से अलग थी; गुरुकुल में वे छात्र के चरित्र को सुधारने में मदद करते हैं। संचार का माध्यम 'संस्कृत' था। सभी पाठ संस्कृत भाषा में दिए गए थे। वे उन्हें संस्कृति, परंपरा और गुणों के बारे में जागरूक करते हैं और हिंदुओं की परंपरा को बढ़ावा देते हैं। छात्र अपने कौशल को अधिक कुशलता से विकसित करता है और अधिक अनुशासित हो जाता है। ''गुरु'' द्वारा दिए गए निर्देश सबसे महत्वपूर्ण चीजें हैं, और गुरुकुल के छात्रों को शिक्षक या गुरु के निर्देशों का पालन करना होता है। छात्र द्वारा पहनी जाने वाली पोशाक धोती और कुर्ता थी; छात्र के लिए कोई विशेष वेशभूषा नहीं है। गुरुकुल के आचार्य छात्र को जीवन में किसी भी स्थिति से निपटने का तरीका सिखाते हैं।

प्राचीन गुरुकुल शिक्षा और आधुनिक शिक्षा में अंतर:-

1. गुरुकुल शिक्षा का मकसद था चरित्र निर्माण, आध्यात्मिक ज्ञान, जीवन मूल्यों और कौशल विकास करना, वहीं आधुनिक शिक्षा का मकसद है ज्ञान हासिल करना, रोजगार के अवसर पाना और प्रतिस्पर्धात्मक परीक्षाओं में सफल होना।
2. गुरुकुल में शिक्षा प्रेम पर आधारित थी, वहीं आधुनिक शिक्षा प्रतियोगिता पर आधारित है।
3. गुरुकुल में शिक्षा का माहौल प्रेममय था, वहीं आधुनिक शिक्षा में प्रौद्योगिकी का इस्तेमाल करके छात्रों को संलग्न किया जाता है।
4. गुरुकुल में धर्म, संस्कृत, शास्त्र, चिकित्सा, दर्शन, साहित्य, युद्ध, राज्य कला, ज्योतिष, इतिहास जैसे विषयों की शिक्षा दी जाती थी।

The Asian Thinker

The Asian Thinker
A Quarterly Bilingual Peer-Reviewed Journal for Social Sciences and Humanities
Year-7 Volume: IV (Special), October-December, 2025
Issue-28 ISSN: 2582-1296 (Online)
Website: www.theasianthinker.com **Email**: asianthinkerjournal@gmail.com

5. पारंपरिक व्यवस्था में विद्यार्थी के पास सीखने के बहुत सीमित रास्ते होते थे; वह अधिकांशतः कमरों के अंदर ही सीखता है। इसके विपरीत गुरुकुल में विद्यार्ती कक्षा की दीवारों तक सीमित नहीं रहता। इसके बजाय उसका आसपास का पूरा वातावरण प्रयोगशाला की तरह होता है।

इस तरह स्पष्ट है कि गुरुकुल परंपरा में शिष्यों के साथ-साथ आचार्य का जीवन भी सरल, श्रद्धापूर्ण, भक्तिपूर्ण और त्याग पर आधारित था; यही कारण है कि शिष्य आचार्य के साथ रहकर गुरु के व्यक्तित्व और आचरण से सीखता था। वह अपने आस- पास की हर चीज से सीखता था। गुरुकुलों में उस समय तक ज्ञात खगोलशास्त्र, दर्शन, धर्मसूत्र, ब्राह्मण, आयुर्वेद, वेद, वेदांग, गणित आदि सभी शास्त्र और विज्ञान पढ़ाए जा रहे थे। शिक्षा पूरी होने पर गुरु शिष्य की परीक्षा लेते थे और दीक्षा देते थे। शिष्य अपनी शक्ति के अनुसार गुरु को दक्षिणा देते थे। लेकिन गरीब छात्रों को इससे मुक्ति भी मिल सकती थी। यह एक निर्विवाद तथ्य है कि वर्तमान समाज, जो युवा पीढ़ी का पोषण करता है, नैतिक, आध्यात्मिक और धार्मिक मूल्यों के संदर्भ में गंभीर कमियों का सामना करता है। बच्चों पर माता-पिता का दबाव खतरनाक रूप से बढ़ रहा है; अकेले प्रतियोगी परीक्षाओं पर ध्यान केंद्रित करने का तनाव युवा मानसिक ढांचे पर अधिक प्रभाव डाल रहा है। नैतिक प्रशिक्षण के माध्यम से बच्चे व्यक्तित्व विकास के महत्वपूर्ण पहलुओं से दूर होते जा रहे हैं। व्यर्थ के दबाव ने शैक्षिक बोलचाल को शिक्षा के प्रति एक समग्र दृष्टिकोण से हास्यास्पद तरीके से सीखने तक ले लिया है। दुर्भाग्य से, बुनियादी ढांचे की कमी और नैतिक क्षमताओं में गिरावट के कारण पिछले कुछ दशकों में शिक्षा के स्तर में भारी गिरावट आई है। नतीजतन, शिक्षक और छात्र दोनों उन असाधारण सुविधाओं से पूरी तरह वंचित हो गए हैं जो बेहतर जीवन स्तर को बढ़ावा दे सकती हैं।

भारत में गुरुकुलों की व्यवस्था बहुत समय तक चलती रही। आचार्यों और गुरुकुलों के भरण-पोषण की सारी व्यवस्था करना राज्य अपना कर्तव्य समझता था। कौशल विकास गुरुकुल प्रणाली के मुख्य लाभों में से एक है। गुरुकुल प्रणाली लचीली और नवीन होने के अलावा आधुनिक शिक्षा प्रणाली की तुलना में कई लाभ प्रदान करती है। इसकी समग्र सीखने की क्षमता इसे पारंपरिक आधुनिक शिक्षा का एक बहुत ही पसंदीदा विकल्प बनाती है। अपने दैनिक कार्य करने से छात्र स्वतंत्र बनते हैं और उन्हें जीविका के लिए आवश्यक कौशल हासिल करने में मदद मिलती है। प्राचीन भारतीय गुरुकुल प्रणाली ने महान गणितज्ञों को जन्म दिया। प्राचीन भारत में खगोलशास्त्री, विज्ञान और प्रौद्योगिकी का बहुत सार ज्ञान उत्पन्न हुआ था। इस तरह गुरुकुल प्रणाली की सबसे बड़ी खूबी इसकी सादगी है। आजकल जब चीजें बाहरी दिखावे के आधार पर बिकती हैं, तो गुरुकुलों को नुकसान हो सकता है। इसके अलावा गुरुकुल प्रणाली सादा जीवन और उच्च विचार के सिद्धांतों पर जोर देती है। यहाँ भौतिकवाद पर नियंत्रण रखा जाता है, ताकि ध्यान भटकाने वाली चीजें सीमित रहें।

आज गुरुकुल की अवधारणा अब लुप्त हो चुकी है जिसे आज पुनः प्राचीन काल की तरह बहाल करने की जरूरत है। आधुनिक शिक्षा प्रणाली छात्रों को एक दूसरे के साथ प्रतिस्पर्धा करने और अंतहीन दौड़ में शामिल होने पर जोर देती है जबकि गुरुकुल परंपरा में इस तरह से विचार नहीं किया जाता है। आधुनिक शिक्षा प्रणाली बहुत ज्यादा

The Asian Thinker
A Quarterly Bilingual Peer-Reviewed Journal for Social Sciences and Humanities
Year-7 Volume: IV (Special), October-December, 2025
Issue-28 ISSN: 2582-1296 (Online)
Website: www.theasianthinker.com **Email**: asianthinkerjournal@gmail.com

व्यवसायिक हो गई है। इस प्रकार यह प्रणाली दुनिया के युवाओं को सशक्त बनाने के साधन के बजाय, पैसे कमाने का साधन बन गई है। साथ ही मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य के महत्व पर जोर न देना भी इस प्रणाली के लिए बहुत चिंताजनक बात है।

निष्कर्ष

इस प्रकार स्पष्ट है कि प्राचीन भारत में गुरुकुल शिक्षा प्रणाली ने सीखने के लिए एक समग्र दृष्टिकोण अपनाया, जिसमें अकादमिक ज्ञान के साथ-साथ मूल्यों, व्यावहारिक कौशल और आध्यात्मिक विकास पर जोर दिया गया। गुरुकुल शिक्षा की विरासत आधुनिक शैक्षिक प्रथाओं को प्रेरित करती है, व्यक्तिगत सलाह, अनुभवात्मक शिक्षा तथा गुरु-शिष्य के बीच बने गहरे बंधन के महत्व को उजागर करती है। आज गुरुकुल के कारण को समझने की आवश्यकता है; यह कैसे काम करता था, अतीत में समाज कैसा था और वर्तमान समय में गुरुकुल प्रशिक्षण के उद्देश्य को कैसे पूरा किया जा सकता है। यह केवल अतीत की नकल करने का मामला नहीं है। यदि गुरुकुल ढांचे को जीवित रखना है और आज की आम जनता को प्रभावित करना है तो इसमें समायोजन और अत्याधुनिक निर्देश और परंपरा दोनों का मिश्रण होना चाहिए। गुरुकुल शिक्षा की समृद्ध विरासत को समझकर हम समकालीन शैक्षिक प्रणालियों को बढ़ाने और अच्छी तरह से विकसित व्यक्तियों को पोषित करने के लिए मूल्यवान अंतर्दृष्टि पा सकते हैं।

यह ठीक है कि भारत में अभी भी कुछ वैदिक गुरुकुल कार्यरत हैं, परन्तु ये गुरुकुल प्राचीन गुरुकुलों की महिमा से मेल नहीं खाते। फिर भी, यह देखकर खुशी होती है कि उनमें से कुछ सभी बाधाओं को पार करते हुए काम कर रहे हैं। अप्रैल 2022 में 'वैदिक कॉन्सेप्ट्स' द्वारा किए गए एक अध्ययन के अनुसार भारत में गुरुकुलों की कुल संख्या 4500 बताई गई है, परन्तु बदलते परिवेश में ये संस्थान किसी तरह अपनी अस्मिता को बचाते चले आ रहे हैं। उम्मीद है हमारी वर्तमान सरकार इस दिशा में कुछ ठोस पहल करेगी और एक बार फिर से सोने की चिड़िया कहे जाने वाला हमारा भारतवर्ष अपनी पुरानी गुरुकुल परंपरा को नए परिवेश से तालमेल के साथ जन-जन के लिए लोकप्रिय बनाने का कार्य करेगी।

संदर्भ सूची

अग्रवाल, वासुदेव शरण. (2012). *पाणिनीकालीन भारत*. नई दिल्ली: मोतीलाल बनारसीदास प्रकाशन.

बाल, अशोक कुमार. (2014). *नालन्दा और विक्रमशिला: भारतीय विश्वविद्यालयों की गौरवगाथा*. नई दिल्ली: प्रकाशन विभाग, भारत सरकार.

गांधी, मोहनदास करमचन्द. (1909). *हिंद स्वराज*. अहमदाबाद: नवजीवन ट्रस्ट.

कल्हण. (1900/1961). *राजतरंगिणी* (सम्पा. एम. ए. स्टीन). वाराणसी: आर. एस. पंडित संस्करण.

काणे, पी. वी. (1977). *धर्मशास्त्र का इतिहास* (अनुवादक: अर्जुन चौबे काश्यप). प्रयागराज: उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान.

कात्यायन. (1917). *कात्यायन स्मृति* (सम्पा. नारायणचन्द्र बंद्योपाध्याय). कोलकाता: संस्कृत प्रेस.

The Asian Thinker
A Quarterly Bilingual Peer-Reviewed Journal for Social Sciences and Humanities
Year-7 Volume: IV (Special), October-December, 2025
Issue-28 ISSN: 2582-1296 (Online)
Website: www.theasianthinker.com **Email**: asianthinkerjournal@gmail.com

मिन्हाज-ए-सिराज जुजजानी. (n.d.). *तबकात-ए-नासिरी* (अनुवादित संस्करण). अलीगढ़: मुस्लिम विश्वविद्यालय प्रेस.

मिश्र, जयशंकर. (1968). *ग्यारहवीं शताब्दी का भारत*. वाराणसी: विद्यामंदिर प्रकाशन.

शर्मा, रामकृष्ण. (2015). *भारतीय शिक्षा: अतीत और वर्तमान*. दिल्ली: प्रकाश बुक डिपो.

श्रवणी, पी. ए. (2017). *दानत्य लक्षण एवं भारतीय शिक्षा प्रणाली*. नई दिल्ली: श्रवणी प्रकाशन.

ठाणे, ए. चंद्र. (1985). *भारतीय शिक्षा का विकास: इतिहास और परंपरा*. मुंबई: भारतीय शिक्षण मंडल.

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (यूजीसी). (2021). *भारतीय उच्च शिक्षा के विकास पर रिपोर्ट*. नई दिल्ली: यूजीसी.

उपनिषद् संग्रह. (n.d.). बंबई: निर्णयसागर प्रेस; गोरखपुर: गीता प्रेस.

वैदिक कॉन्सेप्ट्स शोध समूह. (2022, अप्रैल). *भारत में वर्तमान गुरुकुलों की स्थिति: एक अध्ययन रिपोर्ट*. नई दिल्ली: वैदिक कॉन्सेप्ट्स फाउंडेशन.

The Asian Thinker